गणपति रहस्य

ब्र.कु.जगदीश...

भारत में काफी बड़ी संख्या में लोग गणपति की पूजा, अर्चना व साधना करते हैं। अन्य बहुत से लोग जिनके वे इष्ट नहीं हैं, मुहूर्त अथवा अन्य शुभ अवसरों पर सभी धार्मिक आयोजनों का प्रारंभ गणपति की ही स्तुति से करते हैं। लाखों-करोड़ों व्यापारी अपने बही-खातों के प्रारंभ में अथवा अपने व्यापार की गद्दी के निकट स्थल पर 'स्वास्तिक' का चिन्ह अंकित करते हैं जिसे वे गणपति का सूचक, शुभ तथा लाभप्रद मानते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि एक ओर तो गणपति को लाखों-करोड़ों नर-नारी सब देवताओं में प्रथम स्तुत्य मानते हुए अपने कार्यों की निर्विघ्नता पूर्वक समाप्ति के लिए अर्चना करते हैं। यहां तक कि साधक लोग स्वयं परमात्मा शिव की उपासना मानते हुए कहते हैं कि 'पहले गणपति गणेश मनाया करो, पीछे भोला जी के दर्शन पाया करो।' परंतु दूसरी ओर ऐसे भी लोग हैं जो गजवदन, वक्रतुण्ड (मुड़ी हुई सूंड), एकदंत, महोदर (बड़ी पेट), मूषक (चूहा) वाहक आदि को देखकर आश्चर्यान्वित होते हैं और यह जानने की जिज्ञासा रखते हैं कि गणनायक कौन है और गणनायक तथा स्वास्तिक का परस्पर क्या मेल है अर्थात् स्वास्तिक को गणपति का प्रतीक क्यों माना जाता है? उनके मन में यह भी प्रश्न उठता है कि गणपति की स्तुति सबसे पहले क्यों होती है और वे विघ्न-विनाशक कैसे हैं?

गणपति के वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए तथा ऊपर लिखे गए प्रश्नों का समाधान करने के लिए उनसे सम्बन्धित जो प्रतीक हैं उनकी व्याख्या करना आवश्यक है। परंतु प्रतीकों का रहस्य स्पष्ट करने से पहले हम यह बताना चाहते हैं कि भारतीय साधना एवं उपासना प्रणाली में परमपिता परमात्मा के जो विभिन्न गुण हैं उनको भारतीय मूर्तिकारों तथा चित्रकारों ने विभिन्न प्रतीकों द्वारा अभिव्यक्त किया है। उदाहरण के तौर पर ज्ञान के सागर परमपिता परमात्मा से जो सद्विवेक प्राप्त होता है, उसे उन्होंने सरस्वती के वाहन 'हंस' रूप में चित्रित अथवा मूर्ति का रूप प्रदान किया है। इसी प्रकार धन, संपदा और वैभव प्राप्त होने पर भी उनमें अनासक्त भाव को लक्ष्मी के कमलपुष्प के रूप में अभिव्यक्त किया है और स्वयं लक्ष्मी को कवियों ने कमला नाम भी दिया है। इस परिपाटी को सामने रखते हुए जब हम गणपति के चित्र को अनुकूल रीति से देखते हैं तो निम्नलिखित भाव स्पष्ट रूप से हमारे सामने आते हैं।

हाथी का सिर:- मनुष्य को जितने पशु-पक्षियों का ज्ञान है उनमें से हाथी (गज) ऐसा जीव है जिसे बुद्धिमान माना जाता है। हाथी का सिर विशाल होता है और यह मान्यता प्रचलित है कि हाथी की स्मृति तेज होती है। वो अपने माहौल को भली-भांति जानता है और उसे परख सकता है। इसलिए अंगेजी में भी कहावत है -''As wise an elephant'' and ''as faithful as an elephant'' जिस मनुष्य को आत्मा और परमात्मा का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त हो, और जिसे सृष्टि के आदि मध्य अंत का भी बोध हो, उसे संस्कृत भाषा में ''विशाल बुद्धि'' कहा जाता है और ऐसा विशाल बुद्धि व्यक्ति जिसे परमपिता परमात्म की स्मृति बनी रहे और जो परमात्मा के प्रति निश्चयवान एवं श्रद्धावान भी हो उसके सिर (जो कि बुद्धि का स्थान है) को भी हाथी ही के सिर के रूप में चित्रित करना युक्तियुक्त है। आम व्यवहार में भी जब किसी व्यक्ति को बहुत सी बातें याद रहती हैं और वह विशाल बुद्धि के जैसे बातें करता है तब सहज ही लोगों के दिल से ये शब्द निकलते हैं ''कमाल है, इसका तो हाथी जैसे दिमाग है!''

फिर हाथी की एक विशेषता और भी होती है। वो जब गली-मोहल्लों या बाजार में से गुजरता है तो भले ही बंदर उसे घूरकर देखते रहें या कुत्ते भौं-भौं करते रहें, वो मस्त रहता है और अपनी सूंड को हिलाते-डुलाते शाही चाल से चलता रहता है। वो उनकी निकम्मी बातों की ओर ध्यान नहीं देता। न उनकी ओछी बातों से

जिस मनुष्य को आत्मा और परमात्मा का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त हो, और जिसे सृष्टि के आदि मध्य अंत का भी बोध हो, उसे संस्कृत भाषा में ''विशाल बुद्धि'' कहा जाता है।

उत्तेजित होता है और न ही गाय, बकरी की तरह भागने लगता है, बल्कि आत्मविश्वास पूर्वक मार्ग पर अग्रसर होता है। ज्ञानवान और योगयुक्त व्यक्ति के भी ऐसे ही लक्षण होते हैं, इसलिए हाथी ही का सिर सर्वथा उपयुक्त है।

हाथी की सूंड (तुण्ड) - आप सोचते होंगे कि अच्छा हाथी के सिर की बातें तो समझ में आ गई परंतु इतने महान शिव सुत (शिवपुत्र) को भला सूंड क्यों दी गई है। ये तो आपको मालूम ही होगा कि हाथी की सूंड इतनी मजबूत और शक्तिशाली होती है कि वो वृक्ष को भी उखाड़कर, सूंड में लपेटकर उठा लेता है, गोया वो एक बुलडोजर और क्रेन दोनों का कार्य एक साथ कर सकता है। वो चाहे तो सूंड से किसी चीज को उखाड़कर ऊपर उछाल दे और या उससे छोटे-छोटे बच्चों को भी प्रणाम करे। किसी को पुष्प अर्पित करे या पानी का लोटा चढ़ाकर किसी की पूजा करे। वो सूंड से केवल वृक्ष जैसी स्थूल चीज ही ग्रहण नहीं करता बल्कि सुई जैसी सूक्ष्म चीज को भी उठा सकता है। इसी प्रकार ज्ञानवान व्यक्ति भी अपनी स्थूल आदतों को भी जड़ों से उखाड़कर फेंकने में समर्थ है तथा सूक्ष्म-से-सूक्ष्म बातों को भी धारण करने के लिए और दूसरों को सम्मान, स्नेह तथा आदर देने में कुशल होता है। अपने पुराने संस्कारों को मूल से पकड़कर निकाल फेंकने के लिए भी हाथी अथवा उसकी सूंड जैसी आध्यात्मिक शक्ति चाहिए। इसलिए हाथी का केवल सिर ही नहीं बल्कि सूंड भी ज्ञानवान मनुष्य की कुछेक विशेषताओं का प्रतीक है।

गज कर्ण:- हाथी के कान तो पंखे जितने बड़े होते हैं। भला ज्ञानवान को इतने बड़े कान लेने की क्या आवश्यकता है?

कान को तो मुख्य ज्ञानेन्द्रिय माना गया है। जब हम किसी को आवश्यक एवं महत्वपूर्ण बात बताते हैं तो कहते हैं कि कान खोलकर सुनो। गुरु भी जब अपने शिष्य को मंत्र देता है तो उसके कान ही में उच्चारण करता है। भगवान ने जब गीता-ज्ञान दिया तो अर्जुन ने कानों के द्वारा ही उसे सुना। अत: बड़े-बड़े कान ज्ञानश्रवण के प्रतीक हैं। इस विधि से सुनने के बिना मनुष्य विशाल बुद्धि हो ही नहीं सकता अथवा हाथी जैसे विशाल सिर का मालिक बन ही नहीं सकता।

हाथी की आँखें:- गणपति की आँखों को हाथी जैसी आँखों के समान चित्रित करने के पीछे गहरा राज है। हाथी के नेत्रों की ये विशेषता है कि उसे छोटी चीज भी बड़ी दिखाई देती है। जैसे उल्लू की आँखों की एक अपनी विशेषता यह है कि उसकी आँखों की पुतलियां सूर्य की रोशनी में चुंधिया जाती हैं, इसलिए वह उन्हें बंद कर लेता है। बिल्ली की आँखों की विशेषता है कि रात्रि को अंधेरे में भी देखने में सक्षम रहती हैं वैसे ही हाथी की आँखों की ये विचित्रता है कि छोटी चीजें भी बड़ी दिखाई देती हैं। अगर उसे छोटी दिखाई देती होती तो वो सबको अपने पांव के नीचे रौंदता हुआ चला जाता।

इस तरह ज्ञानवान व्यक्ति का भी अपना एक विशेष गुण होता है, वो छोटों में भी बड़ाई देखता है। हरेक की महानता उसके सामने उभर आती है इसलिए वो हरेक को आदर देता है। उनके मन को अपने शब्दों से रौंदता नहीं। अत: ज्ञानी के नेत्रों को इस गुण के कारण हाथी के नेत्रों के रूप में चित्रित करना ठीक ही तो है।

गजवदन:- हाथी जैसा मुंह, कान, आँख - ये सब मिलाकर ज्ञानवान व्यक्ति के मुख को हाथी के मुख जैसा प्रदर्शित करने के पीछे भी प्रयोजन है। हाथी का मुख लम्बा-चौड़ा है, इसके विपरीत जब कोई व्यक्ति घबरा जाता है, अपने बुरे कामों के कारण पकड़ा जाता है तो लोग उसके बारे में कहते हैं - ''उसका तो मुख छोटा हो गया है।'' जब कोई कमजोर हो जाता है तब भी उसके बारे में कहते हैं कि इसका तो मुख ही आधा हो गया है। इस प्रकार बड़ा मुख अच्छे कर्मों के कारण निर्भयता का और आत्मिक शक्ति के कारण सामर्थ्य (दुर्बलता के अभाव) का प्रतीक है।

एक दंत:- हाथी के बाहर निकले हुए दो दांत होते हैं जो दिखाने के होते हैं। इस संसार में दूसरे लोगों के द्वारा थोड़ा भी विघ्न न पड़े, उसके लिए यह ख्याल में रखकर चलना पड़ता है ताकि वे ऐसा ही न समझ लें कि हम उनके विघ्न डालने पर कोई कदम ही नहीं उठायेंगे। अपने कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए हमारे पास भी साधन, सम्पर्क और सामर्थ्य है, ऐसा भी कुछ रूप रखना होता है। अपने बचाव के लिए दो दांत न सही, एक दांत तो हमारे पास भी है - लोगों को यह मालूम रहने से वह कोई उल्टा कदम उठाने से टल जाते हैं। यह एक दांत किसी को हानि पहुंचाने के लिए नहीं है, न ही यह दूसरे को

शेष भाग पृष्ठ 6 पर

वंगलोर। ज्ञानीपीठ पुरस्कार विजेता और कन्नड़ा साहित्य परिषद के अध्यक्ष पुंडालिका हलम्बी को सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में हैं हेमा प्रसाद, ब्र.कु.वीणा बहन, सरला दादी तथा अन्य।

वार्शी। महाराष्ट्र राज्य मार्केटिंग फेडरेशन के अध्यक्ष एवं विधायक दिलीप राव सोपल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सोमप्रभा बहन एवं ब्र.कु.संगीता बहन।

शास्त्रीनगर, भीलवाड़ा। जिला पुलिस लाइन में पुलिस के जवानों को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.तनु बहन।

भुवनेश्वर। विधायक अशोक पंडा को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.गीता बहन।

विलासपुर, सिरगिट्टी। जिला पंचायत सदस्य नरेश कौशिक को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.कांता बहन।

छतरपुर। जिलाधिकारी राजेश बहुगुणा को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.शैलजा बहन।